निर्वाण षट्कम्

इन पाठों के बारे में

स्रोत — हर पाठ अपने स्रोत, परम्परा और संस्करण के साथ छपा है। अन्य परम्पराओं और संस्करणों में शब्दों में थोड़ा अन्तर हो सकता है।

लिप्यन्तरण — रोमन पंक्ति देवनागरी से बना IAST लिप्यन्तरण है (ā = दीर्घ आ, ṃ = अनुस्वार, ḥ = विसर्ग, ś/ṣ = श/ष, c = च)। हिन्दी, अवधी और ब्रज पाठों में शब्द के अन्त का मौन 'अ' नहीं लिखा जाता। लिप्यन्तरण में वैदिक स्वर नहीं दिखते।

निर्वाण षट्कम्

प्रकार	स्तोत्र
देवता	भगवान शिव
संस्करण	मिलान किया गया पाठ
परम्परा	स्मार्त
स्रोत	बृहत्स्तोत्ररत्नाकर, प्रथम भाग (1953) — Vol. 1, scan pages 263–264
आभार	पाठ: बृहत्स्तोत्ररत्नाकर भाग 1 (1953), संस्कृत विकिस्रोत योगदानकर्ता (CC BY-SA 4.0)। मिलान, सार और अर्थ: उद्योग ज्योतिष सम्पादकीय टीम।
कॉपीराइट	Text in the public domain. Transcription from Sanskrit Wikisource, CC BY-SA 4.0.

मनोबुद्ध्यहङ्कारचित्तानि नाहं

manobuddhyahaṅkāracittāni nāhaṃ

न च श्रोत्रजिह्वे न च घ्राणनेत्रे ।

na ca śrotrajihve na ca ghrāṇanetre |

न च व्योम भूमिर्न तेजो न वायु-

na ca vyoma bhūmirna tejo na vāyu-

श्चिदानन्दरूपः शिवोऽहं शिवोऽहम् ॥ १ ॥

ścidānandarūpaḥ śivo'haṃ śivo'ham || 1 ||

न च प्राणसंज्ञो न वै पञ्चवायु-

na ca prāṇasaṃjño na vai pañcavāyu-

र्न वा सप्तधातुर्न वा पञ्चकोशः।

rna vā saptadhāturna vā pañcakośaḥ|

न वाक्पाणिपादं न चोपस्थपायू

na vākpāṇipādaṃ na copasthapāyū

चिदानन्दरूपः शिवोऽहं शिवोऽहम् ॥ २ ॥

cidānandarūpaḥ śivo'haṃ śivo'ham || 2 ||

न मे द्वेषरागौ न मे लोभमोहौ

na me dveṣarāgau na me lobhamohau

मदो नैव मे नैव मात्सर्यभावः ।

mado naiva me naiva mātsaryabhāvaḥ |

न धर्मो न चार्थो न कामो न मोक्ष-

na dharmo na cārtho na kāmo na mokṣa-

श्चिदानन्दरूपः शिवोऽहं शिवोऽहम् ॥ ३ ॥

ścidānandarūpaḥ śivo'haṃ śivo'ham || 3 ||

स्रोत-सहित पारम्परिक पाठ। किसी निश्चित परिणाम का दावा नहीं।

न पुण्यं न पापं न सौख्यं न दुःखं

na puṇyaṃ na pāpaṃ na saukhyaṃ na duḥkhaṃ

न मंत्रो न तीर्थं न वेदा न यज्ञाः ।

na maṃtro na tīrthaṃ na vedā na yajñāḥ |

अहं भोजनं नैव भोज्यं न भोक्ता

ahaṃ bhojanaṃ naiva bhojyaṃ na bhoktā

चिदानन्दरूपः शिवोऽहं शिवोऽहम् ॥ ४ ॥

cidānandarūpaḥ śivo'haṃ śivo'ham || 4 ||

न मृत्युर्न शङ्का न मे जातिभेदः

na mṛtyurna śaṅkā na me jātibhedaḥ

पिता नैव मे नैव माता च जन्म ।

pitā naiva me naiva mātā ca janma |

न बन्धुर्न मित्रं गुरुर्नैव शिष्य-

na bandhurna mitraṃ gururnaiva śiṣya-

श्चिदानन्दरूपः शिवोऽहं शिवोऽहम् ॥ ५ ॥

ścidānandarūpaḥ śivo'haṃ śivo'ham || 5 ||

अहं निर्विकल्पो निराकाररूपो

ahaṃ nirvikalpo nirākārarūpo

विभुत्वाच्च सर्वत्र सर्वेन्द्रियाणाम् ।

vibhutvācca sarvatra sarvendriyāṇām |

न चासङ्गतं नैव मुक्तिर्न मेय-

na cāsaṅgataṃ naiva muktirna meya-

श्चिदानन्दरूपः शिवोऽहं शिवोऽहम् ॥ ६ ॥

ścidānandarūpaḥ śivo'haṃ śivo'ham || 6 ||

॥ इति श्रीमच्छङ्कराचार्यविरचितं निर्वाणषट्कं सम्पूर्णम् ॥

|| iti śrīmacchaṅkarācāryaviracitaṃ nirvāṇaṣaṭkaṃ sampūrṇam ||

अर्थ

संक्षिप्त भावार्थ, अनुवाद नहीं। मैं मन, बुद्धि, अहंकार या चित्त नहीं; न कान, जीभ, नाक या आँख; न आकाश, पृथ्वी, अग्नि या वायु। मैं प्राण नहीं, सात धातु या पाँच कोश नहीं, न वाणी, हाथ या पैर। मुझमें द्वेष-राग, लोभ-मोह, मद-मात्सर्य नहीं; न धर्म, न अर्थ, न काम, न मोक्ष। न पुण्य-पाप, न सुख-दुःख; न मन्त्र, तीर्थ, वेद या यज्ञ; मैं न भोक्ता हूँ, न भोजन, न भोज्य। मुझे मृत्यु या शंका नहीं, जाति-भेद नहीं, माता-पिता या जन्म नहीं; न बन्धु, मित्र, गुरु या शिष्य। मैं निर्विकल्प, निराकार, सर्वव्यापी हूँ; न आसक्त, न मुक्त। हर श्लोक की टेक उत्तर देती है: मैं चिदानन्दरूप शिव हूँ, शिव हूँ।

स्रोत-सहित पारम्परिक पाठ। किसी निश्चित परिणाम का दावा नहीं।

इस दस्तावेज़ के बारे में

इस दस्तावेज़ के पाठ सार्वजनिक (पब्लिक डोमेन) पारम्परिक भक्ति पाठ हैं या हमारी टीम द्वारा लिखे गए हैं, और अपने दर्ज स्रोत व संस्करण के साथ छपे हैं।

अर्थ हमारे शब्दों में संक्षिप्त व्याख्याएँ हैं, विद्वत्तापूर्ण अनुवाद नहीं। किसी पाठ के अपने श्लोकों में बताए लाभ पाठ का अंश हैं, गारण्टी नहीं।

कुछ साधनाएँ परम्परा से गुरु-मार्गदर्शन में की जाती हैं। अपनी परम्परा के मार्गदर्शन का पालन करें।